Akshardhara Research Journal
Single Blind Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
E ISSN -3048-8095 / Bimonthly / January- February 2025 / VOL -01 ISSUE-IV

02

महाकुंभ 2025 :सुव्यवस्था, स्वशासन एवं सरकार के सामने एक चुनौती

प्रितेश राय
शोधार्थी समाजशास्त्र विभाग,
दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर

प्रो. अनुराग द्विवेदी
विभागाध्यक्ष, समाजशास्त्र विभाग,
दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर

महाकुंभ मेला एक विशाल धार्मिक मेला है। जिसमे भारत के विभिन्न हिस्सों से लोग आते है।यह मेला कई दिन चलता है इस वर्ष 2025 मे यह महाकुंभ अधिक महत्वपूर्ण है। इस समय लाखो श्रद्धालु संगठित रूप से विभिन्न घाटो पर स्नान करते हैं। इस मेले में भीड़ का अत्यधिक दबाव और व्यवस्थाएं इतनी जटिल होती है कि इसे सफलतापूर्वक आयोजित करना एक बहुत बड़ी चुनौती का कार्य है। सुव्यवस्था का मतलब केवल शांति बनाए रखना नहीं है बल्कि यह सुनिश्चित करना है कि हर व्यक्ति को सुरक्षा, स्वच्छता, स्वास्थ्य सेवाएं यातायात और आवश्यक सुविधाएं मिलें। महाकुंभ में कल्पवास का भी विशेष महत्व है जिसमें श्रद्धालु विशेष रूप से गंगा और यमुना के संगम तट पर एक माह तक वास करते हैं। यह व्रत माघ माह में आरंभ होता है, इस बार यह 12 जनवरी से शुरू होकर 27 फ़रवरी तक रहेगा। इसमे कुछ नियमों का पालन करना होता है और श्रद्धालुओं को अपनी इच्छाओं और इंद्रियों पर कड़ा नियंत्रण रखना होता है।

महाकुंभ को लेकर एक मान्यता यह भी है कि समुंद्र मंथन के पश्चात जब अमृत प्राप्त हुआ तो उस अमृत को पीने के लिए देवता और राक्षसों में युद्ध होने लगा। अब सबसे बड़ा प्रश्न था कि दानवों से अमृत को कैसे बचाया जाए तो भगवान विष्णु ने मोहिनी का रूप धारण किया और देवता और दानवों के साथ नृत्य करना शुरू किया और नृत्य करते करते मोहिनी (जो भगवान विष्णु का ही रूप थी) ने अमृत के पात्र राक्षसो को ना पिलाकर देवताओं को पिला दिया। जिससे देवता अमर हो गये।

मुख्य शब्द : महाकुंभ, सुव्यवस्था , स्वशासन, धर्म, परंपरा , चुनौती

महाकुंभ 2025 की सुव्यवस्था:

एक ऐसा उत्सव जहाँ लाखों श्रद्धालु एक साथ एक स्थान पर इकट्ठा हो रहे हैं, श्रद्धालुओं की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए पुलिस और प्रशासनिक अधिकारियों का विस्तृत नेटवर्क होना जरूरी है। इसके अंतर्गत निगरानी AI युक्त कैमरे, ड्रोन तकनीकी, और पर्याप्त पुलिस बल की तैनाती की जाती है। साथ ही, संदिग्ध गतिविधियों और आतंकवादी हमलों से बचने के लिए खुफिया एजेंसियों के साथ समन्वय किया जाता है।

- ✓ स्वास्थ्य सेवाएँ: इतने बड़े आयोजन में स्वास्थ्य संकट भी उत्पन्न हो सकते हैं। महाकुंभ के दौरान स्वास्थ्य सेवाओं का भी महत्वपूर्ण योगदान होता है। चिकित्सकीय सहायता केंद्रों की स्थापना की जाती है, ताकि किसी भी आपातकालीन स्थिति में त्वरित इलाज मिल सके। इसके अलावा, महामारी जैसी स्थिति से निपटने के लिए विशेष प्रोटोकॉल तैयार किए जाते हैं। महाकुंभ में आने वाले श्रद्धालुओं और तीर्थयात्रियों को त्वरित और ऊच्च गुणवत्तायुक्त उपचार प्रदान करने के लिए इन ऑब्जर्वेशन रूम में सभी जरूरी उपकरण और दवाईयां भी उपलब्ध रहेंगी। रेलवे के इन ऑब्जर्वेशन रूम में ECG मशीन, डिफ़िब्रिलेटर, ऑक्सीजन कन्सेन्ट्रेटर, ग्लूकोमीटर जैसे प्राथमिक चिकित्सा के मेडिकल उपकरण मौजूद रहेंगे। सर्दी के मौसम, भीड़ और अधिक चलने से हार्ट पेशेंट, साइनस, डायबटीज के पेशेंट को होने वाली समस्याओं का तत्काल प्राथमिक इलाज किया जा सकेगा।
- ✓ जल आपूर्ति और सफाई: कुंभ मेला स्थल पर लाखों श्रद्धालुओं की मौजूदगी के कारण जल आपूर्ति और सफाई व्यवस्था का अत्यधिक ध्यान रखा जाता है। मेला क्षेत्र में शौचालय, पेयजल स्टेशन और कचरा प्रबंधन की सुविधाएं सुनिश्चित की जाती हैं। विशेष रूप से संगम क्षेत्र में गंदगी और जल प्रदूषण को नियंत्रित करने के लिए प्रभावी उपाय किए जाते हैं। इस आयोजन में प्रत्येक स्थान की संवेदनशीलता को पहचानना जरूरी होता है। ऐसे क्षेत्रों में विशेष ध्यान दिया जाता है, जहां अधिक भीड़ होने की संभावना रहती है। इसके लिए प्रशासन एक विशेष योजना तैयार करता है, जिसमें मार्गदर्शन, भीड़ नियंत्रण और दुर्घटनाओं से बचाव की व्यवस्था की जाती है।
- ✓ •परिवहन और यातायात व्यवस्था: इतने बड़े आयोजन में यातायात व्यवस्था का भी विशेष ध्यान रखना होता है। रास्तों की भीड़ को नियंत्रित करने के लिए विशेष मार्गों का निर्धारण किया जाता है और यातायात पुलिस की तैनाती की जाती है। इसके अलावा, श्रद्धालुओं के लिए पार्किंग स्थल, बसों और अन्य परिवहन के साधनों का उचित इंतजाम किया जाता है। सुरक्षा सुनिश्चित करने के

©Copyright 2024 *ADRJ*. All Rights Reserved

Akshardhara Research Journal
Single Blind Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
E ISSN -3048-8095 / Bimonthly / January- February 2025 / VOL -01 ISSUE-IV

लिए पूरे मेला क्षेत्र में 2,700 से अधिक AI युक्त कैमरे और विभिन्न सुरक्षा बल तैनात किए जाएंगे! जिससे बड़ी भीड़ को प्रबंधित करने के लिए बहुस्तरीय सुरक्षा दृष्टिकोण बनाया जाएगा।

- ✓ पर्यावरण संरक्षण का संदेश: कुंभ में सद्भावना हरा भरा फ़ाउंडेशन द्वारा 10 लाख पौधों को लगाने का कार्य किया जा रहा है। ऐसे सैकडों संगठन पर्यावरण को संवारने का कार्य कर रहें हैं! महाकुम्भ के आयोजन में पर्यावरण संरक्षण और स्वच्छता को लेकर कई अनूठे प्रयोग किए गए हैं। इसी कड़ी में जल कलश महाकुम्भ में आकर्षण का केंद्र बना हुआ है, जिसकी स्थापना अरैल घाट सेक्टर 24 निषाद राज मार्ग में की गई है। जल कलश में कुम्भ क्षेत्र में प्रयोग की गई पानी की बोतलों को इकट्ठा किया गया है और इन बोतलों को रिसाइकिल करके उपयोग में लाया जायेगा, जिससे प्रकृति में इन प्लास्टिक की बोतलों का दुष्प्रभाव न पड़ सके।
- ✓ मेला क्षेत्र: यह आयोजन लगभग 4,000 हेक्टेयर को कवर करेगा, जो 2019 में आयोजित पिछले कुंभ मेले से 25% अधिक है।
- ✓ सेक्टर: भीड़ प्रबंधन को बढ़ाते हुए क्षेत्र को 2019 में 20 सेक्टरों की तुलना में 25 सेक्टरों में विभाजित किया गया है।
- ✓ घाट की लंबाई: स्नान घाटों की कुल लंबाई 2019 में 8 किलोमीटर से बढ़कर 2025 में 12 किलोमीटर हो गई है।
- ✓ पार्किंग सुविधाएं: पार्किंग की जगह बढ़कर 1,850 हेक्टेयर हो गई है, जो पहले 1,291 हेक्टेयर थी।
- ✓ सड़क अवसंरचना: मेला क्षेत्र के भीतर सड़क की कुल लंबाई 299 किलोमीटर से बढ़कर 450 किलोमीटर से अधिक हो गई है।

महाकुंभ 2025 और स्वशासन:

स्वशासन का अर्थ है कि किसी व्यवस्था को स्वयं से संचालित किया जाए, जिसमें समाज के प्रत्येक सदस्य की भागीदारी और निर्णय प्रक्रिया में सक्रिय योगदान इस आयोजन में विभिन्न स्थानीय समितियाँ और संगठन अहम भूमिका निभाते हैं। ये समितियाँ प्रशासन की मदद से आयोजन की व्यवस्थाओं का संचालन करती हैं और स्वयंसेवकों को प्रशिक्षित करती हैं। इन समितियों का मुख्य उद्देश्य आयोजन स्थल पर उपस्थित श्रद्धालुओं को सुविधाएँ प्रदान करना और यह सुनिश्चित करना होता है कि हर प्रक्रिया सुव्यवस्थित रूप से चले। महाकुंभ के आयोजन में विभिन्न धार्मिक संगठन और संप्रदाय भी सक्रिय रूप से शामिल होते हैं। ये संगठन श्रद्धालुओं के लिए धार्मिक मार्गदर्शन, पूजा, यज्ञ और अन्य धार्मिक गतिविधियों का आयोजन करते हैं। इसके साथ ही, इन संगठनों के माध्यम से सामाजिक समरसता और सहयोग की भावना को भी बढ़ावा दिया जाता है। महाकुंभ के आयोजन में स्थानीय लोग और स्वयंसेवक बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। यह सनातन संस्कृति का यह मात्र मेला नहीं संकल्प का महापर्व है। नई पीढ़ी में हिंदू धर्म, संस्कृति का महत्व और आचरण का आग्रह सभी को करना चाहिए। समाज की सज्जन शक्ति, संत शक्ति और शासन शक्ति तीनों के समन्वित प्रयास से ही धर्म, संस्कृति और समाज का रक्षण संवर्धन होगा। स्थानीय लोग एवं स्वमसेवक व्यवस्था बनाए रखने, भीड़ को नियंत्रित करने, स्वास्थ्य सेवाएँ प्रदान करने, और अन्य कार्यों में प्रशासन की मदद करते हैं। एक ऐसा अवसर है, जिसमें श्रद्धालु अपनी आस्था और विश्वास के साथ आयोजन में भाग लेते हैं। स्वशासन का यह पहलू यह सुनिश्चित करता है कि श्रद्धालु अपनी जिम्मेदारियों को समझें और स्वच्छता, सुरक्षा और शांति बनाए रखने में प्रशासन का सहयोग करें।

सरकार की भूमिका और चुनौतियाँ:

महाकुंभ के आयोजन में सरकार का अहम योगदान होता है। भारतीय सरकार और राज्य सरकारें मिलकर महाकुंभ की समग्र व्यवस्था को सुनिश्चित करती हैं। इस आयोजन में सरकार की भूमिका निम्नलिखित है

- ✓ : निवेश और बजट आवंटन: महाकुंभ के आयोजन के लिए सरकार एक बड़ा बजट आवंटित करती है, ताकि आयोजनों के लिए आवश्यक सुविधाएँ और बुनियादी ढाँचे तैयार किए जा सकें। इसमें सड़कें, पुल, पार्किंग स्थल, जल आपूर्ति, चिकित्सा केंद्र और अन्य संरचनाएँ शामिल होती हैं।
- ✓ कानूनी और प्रशासनिक व्यवस्थाएँ: सरकार का कर्तव्य है कि वह महाकुंभ के आयोजन के दौरान कानूनी व्यवस्था बनाए रखे। इसके लिए प्रशासन द्वारा विभिन्न सुरक्षा उपायों को लागू किया जाता है। इसके अलावा, प्रशासन यह सुनिश्चित करता है कि कोई भी आपराधिक गतिविधि न हो और कानून का उल्लंघन न हो!
- ✓ पर्यटन और प्रचार: महाकुंभ को एक वैश्विक आयोजन के रूप में प्रचारित किया जाता है। सरकार इसके प्रचार के लिए विभिन्न मीडिया माध्यमों का उपयोग करती है, ताकि दुनिया भर से लोग इस महान धार्मिक और सांस्कृतिक आयोजन में भाग लें। इसके साथ ही, यह आयोजन भारत के पर्यटन उद्योग को बढ़ावा भी देता है।

Akshardhara Research Journal
Single Blind Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
E ISSN -3048-8095 / Bimonthly / January- February 2025 / VOL -01 ISSUE-IV

- ✓ इन्फ्रास्ट्रक्चर का विकास: महाकुंभ के आयोजन के दौरान जिस क्षेत्र में यह मेला होता है, वहां विशेष इंफ्रास्ट्रक्चर विकसित किया जाता है। सरकार इसके लिए आवश्यक सुविधाओं का निर्माण करती है, जैसे कि सड़कें, पुल, पब्लिक टॉयलेट्स, स्वास्थ्य केंद्र, आदि। यह इंफ्रास्ट्रक्चर न केवल महाकुंभ के समय काम आता है, बल्कि बाद में भी स्थानीय समुदाय के लिए फायदेमंद होता है। महाकुंभ में सबसे बड़ी चुनौती है वो है भीड़ प्रबंधन का कार्य। जब किसी विशेष स्नान पर श्रद्धालुओं की संख्या करोड़ों में होती है और इस समय सरकार के पास तथा वहाँ की प्रशासन के पास भी बहुत बड़ी चुनौती होती है कि इसका प्रबंध कैसे किया जाये।

महाकुंभ में VIP एवं VVIP संस्कृति को सरकार को खत्म करना चाहिए। इससे पहले सदियों से यह कुंभ चलते आ रहा है जिसमे कभी ये प्रथा नही थी। कुंभ को महाकुंभ बनाते है वे आम लोग जो ज़्यादातर ग्रामीण है। जिन्हे 10-15 km पैदल चलना पड़ रहा है। उनके लिए सरकार को और बेहतर व्यवस्था देनी चाहिए। श्रद्धालुओं को ठहरने का उचित प्रबंध होना चाहिए। हालाकि करोड़ो लोगो को एक स्थान पर रहने की व्यवस्था करना कठिन कार्य है। इसमें हम स्वयंसेवक संगठन, एनजीओ, तथा वहाँ के निजी सेवा संस्थान की मदद ले सकते है। लोगो के लिए पेयजल, तथा शौचालय की समुचित व्यवस्था हो। तथा जो पुलिसकर्मी बाहर से महाकुंभ में ड्यूटी मे आये है उनके साथ वहाँ के सहकर्मी तथा स्थानीय व्यक्ति मिलकर श्रद्धालुओ की मदद कर सकते हैं। नदियों के पानी को स्वच्छ रखने के लिए सरकार को जन- जागरुकता अभियान चलानी चाहिए। संगम क्षेत्र- से 5 से10km के रेन्ज मे पानी की जाँच होनी चाहिए जिसमे करोड़ो लोग स्नान करने वाले है मेला क्षेत्र में कुछ ऐसे जरूरत के सामान है जिसकी कीमत बाहर के बाजार से महँगे है। जैसे खाने-पीने की वस्तुयें, प्रतिदिन की उपयोग की वस्तुयें, फल, आदि, इनकी उचित क़ीमत तय होनी चाहिये। त्रिवेणी घाट पर लगे नाव पर यात्रा करने की उचित क़ीमत तय होनी चाहिए। इस आयोजन में तमाम सोशल मीडिया इंफ्युल्यूएंसर पर भी रोक लगनी चाहिए जो वहाँ पे तमाम नागा साधू को परेशान कर रहें है तथा उनका ग़लत तरीक़े से चित्रण कर रहे है। ये लोग श्रद्धालु नहीं बल्की टूरिस्ट बनकर जा रहें है जिन्हें सिर्फ़ कमियाँ दिखायी दे रही है। अत: मेला समाप्त होने पर एक बहुत बड़ी जिम्मेदारी सरकार तथा प्रयागराज नगर निगम की सफ़ाई की व्यवस्था को लेकर रहेगी जिसमें सरकार को ये सुनिश्चित करना होगा की श्रद्धालुओं द्वारा उपयोग किए गए संसाधनों का सही ढंग से निष्पादन हो सके।

निष्कर्ष : महाकुंभ 2025 का आयोजन केवल एक धार्मिक अवसर नहीं है, बल्कि यह एक बड़ा सामाजिक, सांस्कृतिक और प्रशासनिक कार्य भी है। सुव्यवस्था, स्वशासन और सरकार के सहयोग से यह आयोजन शांतिपूर्ण और सफलतापूर्वक संपन्न होता है। इसे दुनिया भर में हिन्दू धर्म के अनुयायियों के विश्वास और आस्था का प्रतीक माना जाता है, और इस आयोजन में सरकार और समाज की महत्वपूर्ण भूमिका होती है।ताकि यह आयोजन सुरक्षित, सुव्यवस्थित और फलदायक बन सके। तथा विश्व के देशों को एक संदेश दिया जा सकता है कि इतने बड़े आयोजन को को भी शांति पूर्ण ढंग से संपन्न किया जा सकता है।

संदर्भ सूची :

1. James Lochtefeld (2008). Knut A. Jacobsen (ed.). South Asian Religions on Display: Religious Processions in South Asia and in the Diaspora. Routledge. pp. 29 33. ISBN 978- 1-134-07459-4. Accessed on January 28, 2025.
2. Maclean, Kama (2003). "Making the Colonial State Work for You: The Modern Beginnings of the Ancient Kumbh Mela in Allahabad".
3. www.uptourism.gov.in
4. https://www.google.com/url?q=https://www.livehindustan.com/uttar-pradesh/prayagraj/story-research-project-on-kumbh-mela-s-spiritual-and-socio-economic-impact-201737093930444.
5. Chaturvedi,Herambh(2019).Kumbh;aitihasikvangmaya, ISBN13:: **9789388684835**
6. https://hindi.business-standard.com/india-news/uttar-pradesh/the-journey-of-150-years-of-kumbh-mela-will-be-shown-in-the-mahakumbh-2025-art-kumbh-exhibition-id-402344/amp